ज्ञान का ऐसा अनीश्वरवादी अथवा आसुरी अनुशीलन सदा निष्फल सिद्ध होता है, यह इस श्लोक का तात्पर्य है। ऐसे व्यक्ति 'वेदान्तसूत्र' तथा 'उपनिषद्' आदि वैदिक वाङ्मय से जो कुछ ज्ञान अर्जन करते हैं, वह सब भी निष्फल (व्यर्थ) है।

इस प्रकार, भगवान् श्रीकृष्ण को साधारण मनुष्य मानना घोर अपराध है। जो ऐसा करते हैं, वे अवश्य भ्रान्त हैं; वे श्रीकृष्ण के सच्चिदानन्दघन श्रीविग्रह को तत्त्व से नहीं जान सकते। 'बृहद् वैष्णवमन्त्र' में तो यहाँ तक कहा है कि जो श्रीकृष्ण के कलेवर को प्राकृत मानता हो, उसे श्रुति के सम्पूर्ण विधान से बहिष्कृत कर देना चाहिए; यदि दैववश उसका मुख दिख जाय, तो दोष-निवृत्ति के लिए तत्काल वस्त्रों सहित गंगास्नान करे। भगवान् श्रीकृष्ण का उपहास वही लोग करते हैं, जो उनके प्रति ईर्ष्यालु हैं। उनका बारम्बार आसुरी तथा अनीश्वरवादी योनियों में ही जन्म होता है; सच्चा ज्ञान सदा मोह से लुप्त रहता है, और वे उत्तरोत्तर अधम योनियों में गिरते हैं।

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः।
भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्।।१३।।

महात्मानः=महात्माजन; **तु**=तो; **माम्**=मुझे; **पार्थ**=हे पृथापुत्र (अर्जुन); **दैवीम्**=दिव्य; **प्रकृतिम्**=प्रकृति के; **आश्रिताः**=आश्रित हुए; **भजन्ति**=सेवा करते हैं; **अनन्यमनसः**=अविचल भाव से; **ज्ञात्वा**=जानकर; **भूत**=सृष्टि का; **आदिम्**=आदि कारण; **अव्ययम्**=अमोघ।

अनुवाद

परन्तु हे पार्थ ! मोहमुक्त महात्माजन तो मेरी दिव्य प्रकृति के आश्रित होकर और मुझे अविनाशी आदिपुरुष जानकर अनन्य चित्त से मेरी भक्ति के ही परायण रहते हैं।।१३।।

तात्पर्य

इस श्लोक में स्पष्ट किया गया है कि महात्मा वास्तव में कौन है। सच्चे महात्मा का प्रथम लक्षण यह है कि वह दिव्य प्रकृति में स्थित रहता है; माया के आधीन नहीं होता। इस स्थिति को प्राप्त करने की विधि का निर्देश सातवें अध्याय में है। जो भगवान् श्रीकृष्ण के शरणागत होता है, वह अविलम्ब मायामुक्त हो जाता है। इस पथ के लिए यही पात्रता है। भगवान् के चरणकमलों में सर्वात्मसमर्पण करते ही तत्क्षण मायाबन्धन से मुक्ति हो जाती है। मुक्ति का बस यही ऐकान्तिक उपाय है। जीव श्रीभगवान् की तटस्था शक्ति है; अतः जैसे ही वह माया से मुक्त होता है, वैसे ही दैवी प्रकृति के आश्रय में आ जाता है। इस प्रकार श्रीभगवान् के चरणारविन्द की शरण लेकर जीव महात्मा पद पर आरूढ़ हो सकता है।

महात्मा का ध्यान श्रीकृष्ण से अतिरिक्त अन्य कहीं नहीं जाता, क्योंकि वह भलीभाँति जानता है कि श्रीकृष्ण आदिपुरुष हैं और सब कारणों के परम कारण हैं। उसे इसमें कुछ संदेह नहीं रहता। ऐसे महात्मा का उदय अन्य महात्माओं अथवा